पुस्तक समीक्षा

बचपन से पलायन

लेखक — जॉन हॉल्ट
अनुवादक — पूर्वा याज्ञनिक कुशवाहा
प्रकाशक — एकलव्य, ई- 10-ए शंकर नगर
भोपाल 462016, मध्य प्रदेश
प्रकाशन वर्ष — 1974
पृष्ठ संख्या — 230
मूल्य — ₹115.00

एक बार मैं अपने मित्र से मिलने उनके घर गया। रविवार का दिन होने के कारण खाना खाकर मैं और मेरा मित्र पुरानी यादें ताज़ा कर रहे थे कि उसकी पाँच वर्ष की बेटी जो कि स्कूल में पढ़ने जाती है अपने गृहकार्य की कोई समस्या लेकर जैसे ही मित्र के पास आई उसका उत्तर था मम्मी से पूछो वही हाल मम्मी का भी था। बच्चा अनमना-सा रह गया। बात यहीं खत्म नहीं होती। इससे भी बुरा तब हुआ जब मित्र और उनकी अर्धांगिनी में इसी बात को लेकर तू-तू मैं-मैं हो गई और शब्द अति विशुद्ध सभ्य भारतीय भाषा (गाली-गलौज) में तब्दील होने लगे। बड़ी मुश्किल से उनको शांत किया। उन दोनों को बैठाकर समझाया लेकिन इन सब के बीच एक बात बहुत ही विपरीत यह रही कि उनकी पाँच वर्ष की मासूम बच्ची डरी-सहमी कोने में दुबकी रही। शायद उसके चेहरे पर व्याप्त भय को तो मैं समझने में सफल रहा परंतु उसके मन की अंतहीन व्याकुलता मेरी मनोवैचारिक सीमाओं से भी परे थी।

कभी आपसी वैचारिक द्वंद्व निर्दोष पंखुड़ियों के कुचले जाने के साथ खत्म होता है तो कभी बच्चों को 'कंक्रीट के उद्यानों' में सुरक्षित करने की आड़ में मानवीय अनुभवों की दुनिया से वंचित रखकर विकास क्रम को उलट दिया जाता है। लेखक जॉन हॉल्ट के दृष्टिकोण से यही बचपन से पलायन है जिसके बारे में उन्होंने 1974 में प्रकाशित हुई अपनी पुस्तक "एस्केप फ्रॉम चाइल्डहुड" में लिखा है। एकलव्य प्रकाशन ने इस पुस्तक को

पूर्वा याज्ञनिक कुशवाहा से हिंदी अनुवाद करवाकर प्रकाशित किया है। पुस्तक की विषय-वस्तु को 28 भागों में बाँटा गया है और प्रत्येक भाग नई विचार शैली का समर्थन करता है।

पुस्तक में लेखक का संकेत उन अद्भुत और विचित्र विचारशील प्राणियों की तरफ है जो इतिहासकार से पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण की गणनाएँ गणितज्ञ से हिंदी व्याकरण रचना और भाष्य टीकाकार से भौतिकी के नियमों का सत्यापन करवाने की सोच लिए बैठे हैं। कितनी ही पुस्तकें लेखक ने पढ़ी होंगी और यह लिखना तय किया होगा कहना कठिन है परंतु पुस्तकों की शृंखला में से फिलिप एरिस की *सेन्चुरीज़ ऑफ़ चाइल्डहुड* पढ़कर जॉन हॉल्ट ने बालमन को शब्दों में रचने का विचार किया। हॉल्ट ने लिखा है कि भविष्य का पहले से कोई अस्तित्व नहीं है। यदि कुछ निर्माण करना है तो वह यही (भविष्य) है।

पुस्तक बालकों, किशोरों और युवाओं के अधिकारों और नियमों सहित उनके अस्तित्व की पैरवी करती है। लेखक को इस बात का भी आभास है कि उसके बालकों के आदर के विचारों से कुछ सहमत हो भी सकते हैं और सभी असहमत भी। जो बात हमारे समझ के साँचे में सही नहीं बैठती अक्सर हमें अनिश्चित असंभव विचित्र और डरावनी सी लगती है। कोई चीज स्थाई रूप से आदर्श नहीं रह सकती। जो परिवर्तन है आवश्यक नहीं गलत हो लेकिन जो गलत है उसका परिवर्तन बेहतर परिणाम दे सकता है।

हॉल्ट ने पुस्तक का शीर्षक पूर्व में बचपन का कारागार अथवा बचपन से मुक्ति देना चाहा था परंतु उनके एक मित्र के सुझाव पर कि कारागार और मुक्ति शब्द बंधन और संकुचित अर्थ लिए होने से सकारात्मक दृष्टिकोण वाले पाठक इसे पसंद नहीं करेंगे इसके स्थान पर क्रियात्मक शब्द पलायन को स्थान दिया। हॉल्ट ने नियम दृष्टिकोण और भावना से जुड़ी जिस संस्थागत बाल्यावस्था का ज़िक्र किया है उसी के लिए अधिकार का पक्ष रखकर बचपन को सुखद बनाने का प्रयास है। अमेरिकन कहावत है कि 'एक खुशहाल घर से कोई कभी नहीं भागता' को चरितार्थ करने के लिए स्वतंत्र रूप से बच्चों, किशोरों और युवाओं को प्रोत्साहित करने व उनकी क्षमताओं को जगाने की ज़रूरत है। इसका उत्तर लेखक को तब मिला जब उसे ऐसे विद्यालय में व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया गया जो कि उदासीन बचपन का कल-कारखाना थी। लेखक ने बालकों से तीन प्रश्न किए। पहला प्रश्न था अगर आपको मताधिकार मिले तो आप में से कितने राजनीतिक चुनावों में मत डालने जाएँगे, दूसरा प्रश्न था अगर आपको कानूनन पैसों के लिए काम करने की अनुमति हो तो आप में से कितने पूरे समय नहीं तो कुछ समय के लिए काम करेंगे और तीसरा प्रश्न था अगर आपको कानूनन घर से अलग रहने की अनुमति हो तो आप में से कितने कम से कम कुछ समय के लिए घर से दूर रहेंगे। जिस पर पहले और दूसरे प्रश्न पर केवल दो-तिहाई बच्चों ने हाथ उठाया जबकि तीसरे प्रश्न के प्रत्युत्तर में हर हाथ तेज़ी से ऊपर उठा। सभी के चहरों पर जादुई चमक थी। पुस्तक लूई तेरहवें से लेकर साधारण बच्चे डॉफिन जैसे विभिन्न उदाहरणों से परिपूर्ण है।

परिवार उसके उद्देश्य आवश्यकताओं और वर्तमान संदर्भ को लेकर लेखक कहता है कि ऐसी संस्था जहाँ हमेशा से सामंजस्य सहित मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति और सुरक्षा सर्वोपरि है और उसकी समृद्धि हेतु सभी सदस्य प्रयासरत हैं आधुनिक समय में पीड़ितों और दुश्मनों का युद्ध क्षेत्र है। जहाँ बड़ों की सत्ता का लोप हो चुका है और दुनिया के विकृत स्थानों में शुमार हैं। जहाँ जीवन की असंख्य विपदाओं यथा प्रदूषण, रोज़गार, शारीरिक एवं मानसिक रोग और विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुए अस्तित्व के लिए संघर्ष का दौर जारी है।

लेखक सन् 1920 के मैनहट्टन की खुली सड़कों पर खेलते बच्चों और आज चार दीवारी से घिरे बचपन की तुलना करते हुए अभिभावकों के बदलते व्यवहार एवं विद्यालयों की गुणवत्ता को लेकर चिंतित हैं। लेखक ने मंद बुद्धि बालकों के एक ऐसे विद्यालय का उल्लेख किया है जो उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है। उनकी मदद हेतु बालकों के अधिकारों का पक्षधर है । लेखक लिखता है कि बच्चों की क्षमताओं जैसे स्वतंत्र घूमने-फिरने, संगीत सुनने, वाद्य बजाने और कभी-कभी पुरज़ोर से चिल्लाने को व्यक्त करने के लिए उनके जबरन हाथ छुड़ाने की प्रवृत्ति को मुक्त करने की आवश्यकता है। उन्हें प्यारा बच्चा मानकर उनकी आवश्यकताओं को अनदेखा करने की बजाय उनके प्रेम की पराकाष्ठा को समझने और उनके कौतुहल का समाधान करने की विशेष ज़रूरत है।

लेखक कहता है कि कई बार बालकों का चेहरा उनकी सिफ़ारिश कर देता है जो कि वास्तविकता का आइना नहीं रहता है। इस समय अच्छे-बुरे का एक अदृश्य सत्ता संघर्ष उनके प्यारेपान को समर्थन देता है परंतु प्रेम हर चीज़ का उपचार नहीं हो सकता। हर्ब स्निट्जर ने अपनी पुस्तक *टुडे इज़ फ़ॉर चिल्ड्रन नम्बर्स कैन वेट* में चार ऐसे उद्दंड बालकों का वर्णन किया है जो प्रेम से समझाने के नुस्खे से सुधरने के बजाय और ज़्यादा बिगड़ गए। किसी की प्रकृति को कुछ समय के लिए दिशा भ्रमित किया जा सकता है लेकिन उन्हें पूर्ण रूप से परिवर्तित नहीं किया जा सकता। जो स्वयं से भटक गया है उसे तो बिना प्रेम (सकारात्मक दंड से न कि नकारात्मक दंड) से ही रास्ते पर लाया जाएगा। लेखक कहता है कि हमारी और बालकों कि आवश्यकताओं में कोई अंतर नहीं है क्योंकि हम सब उसी अवस्था को ग्रहण करते हुए बड़े हुए हैं। कई बार व्यक्ति जाने-अनजाने में प्रतिगमन का उपयोग करता है।

लेखक विवेक, व्यवहार, मानव प्रकृति और अन्य सभी बातों को गौर करते हुए बालकों की मनोदशाओं को भाँपकर कुछ ऐसे अधिकारों की बात करता है जो उनके सम्पूर्ण विकास के लिए आवश्यक हैं।

लेखक के अनुसार, मत देने का अधिकार प्रत्येक बालक के मस्तिष्क को स्वतंत्र विचारों की अभिव्यक्ति, निर्णय करने, विश्लेषण करने एवं स्वच्छ दृष्टिकोण निर्माण की स्वतंत्रता प्रदान करेगा और उनका चयन श्रेष्ठ प्रकार का होगा। काम करने का अधिकार बालकों को स्वयं के अस्तित्व निर्धारण खाली समय के सदुपयोग अर्थ (धन) की पूर्ति करने और कार्य करने की प्रवृत्ति जागृत करने में सहायता देगा।

लेखक चाहता है कि बालकों का कम से कम कुछ चीजों पर स्वामित्व का अधिकार होना ही चाहिए ताकि कुछ चीज़ें उनसे चाहकर भी छीनी न जा सकें क्योंकि उसके तन के वस्त्र तक उसके माता-पिता अथवा अभिभावकों के होते हैं अपना कहने की कोई वस्तु उनके पास है तो वह है केवल तन। एक ऐसा अधिकार भी बालकों को मिलना चाहिए जिसका उपयोग कर वे कहीं भी जब मन हो जा सकें, स्वतंत्र विचरण कर सकें। यात्रा का अधिकार उन्हें यह सुविधा प्रदान करेगा। बालकों को एक अधिकार और मिलना चाहिए अभिभावक चुनने का अधिकार, जिसके अनुसार वे अपने प्राकृतिक अथवा दत्तक अभिभावक का चयन स्वयं कर सकें और आवश्यकतानुसार बदल सकें। सुनिश्चित आय के अधिकार बालकों को जीवन जीने और भरण-पोषण की सुविधा प्रदान करेगा। कानूनी व वित्तीय दायित्व का अधिकार के बारे में 25 दिसम्बर 1972 *को टाइम* पत्रिका में एक लेख चिल्ड्रंस राइट्स — द लेटेस्ट क्रूसेड (बाल अधिकार: ताज़ा जिहाद) शीर्षक से छपा, जिसमें कहा गया कि बच्चों के द्वारा किए गए अपराधों के बावजूद उनके प्रति संवेदनशील होकर विवेकपूर्ण तरीके से भविष्य को ध्यान में रखकर फ़ैसले सुनाए जाएँ और उन्हें कुछ अधिकार दिए जाएँ। अपने शिक्षण के प्रति बालकों को यह सोचने और तय करने कि उन्हें क्या सीखना है, क्यों सीखना है, कब सीखना है, और कैसे सीखना है, से संबंधित शिक्षण को नियंत्रित करने का अधिकार उन्हें अपने ज्ञान को नयी दिशा देने में सहायता करेगा। आजकल धूम्रपान वाली वस्तुओं पर लिखा रहता है कि धूम्रपान कैंसर का कारण है अथवा तंबाकू से कैंसर होता है लेकिन लेखक चाहता है की वैधानिक चेतावनी के द्वारा वस्तुओं को उपयोग करने का अधिकार वयस्कों के साथ-साथ बालकों को भी मिले। जब कभी आवश्यकता पड़े तो बालकों को उनकी मनमर्जी के अनुसार वाहन चलाने का अधिकार भी मिले ताकि वे जब चाहें तब जहाँ-तहाँ घूम सकें। इन सभी अध्ययनों से एक बात तो यह स्पष्ट होती है कि लेखक प्रकृतिवादी दर्शन का पूर्ण समर्थक है।

लेखक युवाओं के दृष्टिकोण को यौन भावनाओं से जोड़ते हुए स्पष्ट करता है कि यह बिल्कुल भी नहीं समझा जाना चाहिए कि बालकों में यौन भावनाएँ नहीं होतीं अथवा दबी हुई होती हैं। अत: उन्हें यौन संबंध स्थापित करने हेतु आवश्यक शिक्षा और क़ानूनी सुरक्षा मिलनी चाहिए। इससे हम उन अनुभवहीन किशोर और किशोरियों को यौन खतरों से बचा सकते हैं। तीन बेटियों की एक माँ ने लेखक को बताया की उसने समाज कि मर्यादा को ध्यान में रखकर अपनी बेटी को तमाम प्रकार की धमकियों से एक किशोर के साथ संबंध बनाने से बचा लिया। लेखक कहता है कि कुछ समय के लिए तो उस पर नियंत्रण बनाया जा सकता है लेकिन भविष्य में अवसर मिलने पर वह ऐसा नहीं करेगी इसकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। यौन इच्छाएँ रेत की तरह होती हैं जितना मुट्ठी को कसने की कोशिश करते हैं उतनी ही फिसलती हैं। अतः स्वयं के नियंत्रण हेतु प्रशिक्षण और कानूनी सहायता की आवश्यकता है।

लेखक बचपन से पलायन को रोकने हेतु कहता है कि हमें बालक से शिष्टता से व्यवहार करना चाहिए। सभी के आत्मसम्मान को समझना और उसके जैसा ही आचरण करना चाहे उसकी शुरुआत औपचारिकता के साथ ही की जाए। सफल बनने के लिए असफलता का साथ नहीं छोड़ा जा सकता है। यदि हम सम्मान देंगे तो सम्मान पाने के हकदार होंगे। हमें बच्चों के साथ कृपया माफ करना, धन्यवाद उसी लहज़े में कहना सीखना होगा जिस लहजे में हम अपने लिए चाहते हैं। बच्चा एकांत चाहता है तो उसे एकांत में रहने की आज़ादी दी जानी चाहिए। बार-बार यह कहना कि डरो, खतरा है, देख नहीं सकते, बच्चों में जाकर खेलों से बचने की आवश्यकता है। बालकों को मित्र बनाने हेतु आयु की बाधा को हटाने, अजनबियों से बात करने एवं सुरक्षित रहने, शोषण के प्रति सजग रहने की जुगत लगानी होगी। इन उद्देश्यों की दिशा में न्यूयॉर्क में स्थित बाल न्याय संस्थान (Institute for Juvenile Justice) प्रयासरत है।

हॉल्ट ने किस उद्देश्य और दर्शन को लेकर यह पुस्तक लिखी है वह निश्चित ही बिना पुस्तक पढ़े पता नहीं चल सकता है। उनके कॉलरेडो और मैसाच्युसेट्स के विभिन्न विद्यालयों में अध्यापन के दौरान प्राप्त अनुभवों को उन्होंने शब्दों में रूपांतरित किया है। पुस्तक के अविस्मरणीय लेखांकन के लिए लेखक धन्यवाद का पात्र है। साथ ही इस पुस्तक का विशिष्ट भाषा शैली के साथ सटीक एवं रोचक हिंदी अनुवाद करने के लिए अनुवादक भी बहुत ही बधाई का पात्र है। महज ₹115 की सहयोग राशि में ही यह पुस्तक पाठकों हेतु उपलब्ध करने हेतु एकलव्य प्रकाशन भी बधाई का पात्र है।

पतंजलि मिश्र
सहायक प्रोफ़ेसर, शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय
कोटा, राजस्थान 324 010

भूपेंद्र सिंह
शोध छात्र, शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय
कोटा, राजस्थान 324 010